RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ARJUN BATCH

CLASS 10th | GEOGRAPHY

संसाधन एवं विकास

Resources and Development

अध्याय-1 | भाग-3

एकदम BASIC से!



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?



1. भारत में संसाधन नियोजन
2. संसाधनों का संरक्षण
3. भारत - मानचित्र

निम्न में से भारत के किन राज्यों में खनिज और कोयले के प्रचुर भंडार है ?

अ झारखंड

ब मध्यप्रदेश

स छत्तीसगढ़

द उपरोक्त सभी



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राजस्थान के पश्चिमी भाग में मुख्य रूप से किस संसाधन की कमी है ?

अ सौर ऊर्जा

ब पवन ऊर्जा

स जल संसाधन

द उपरोक्त में से कोई नहीं



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

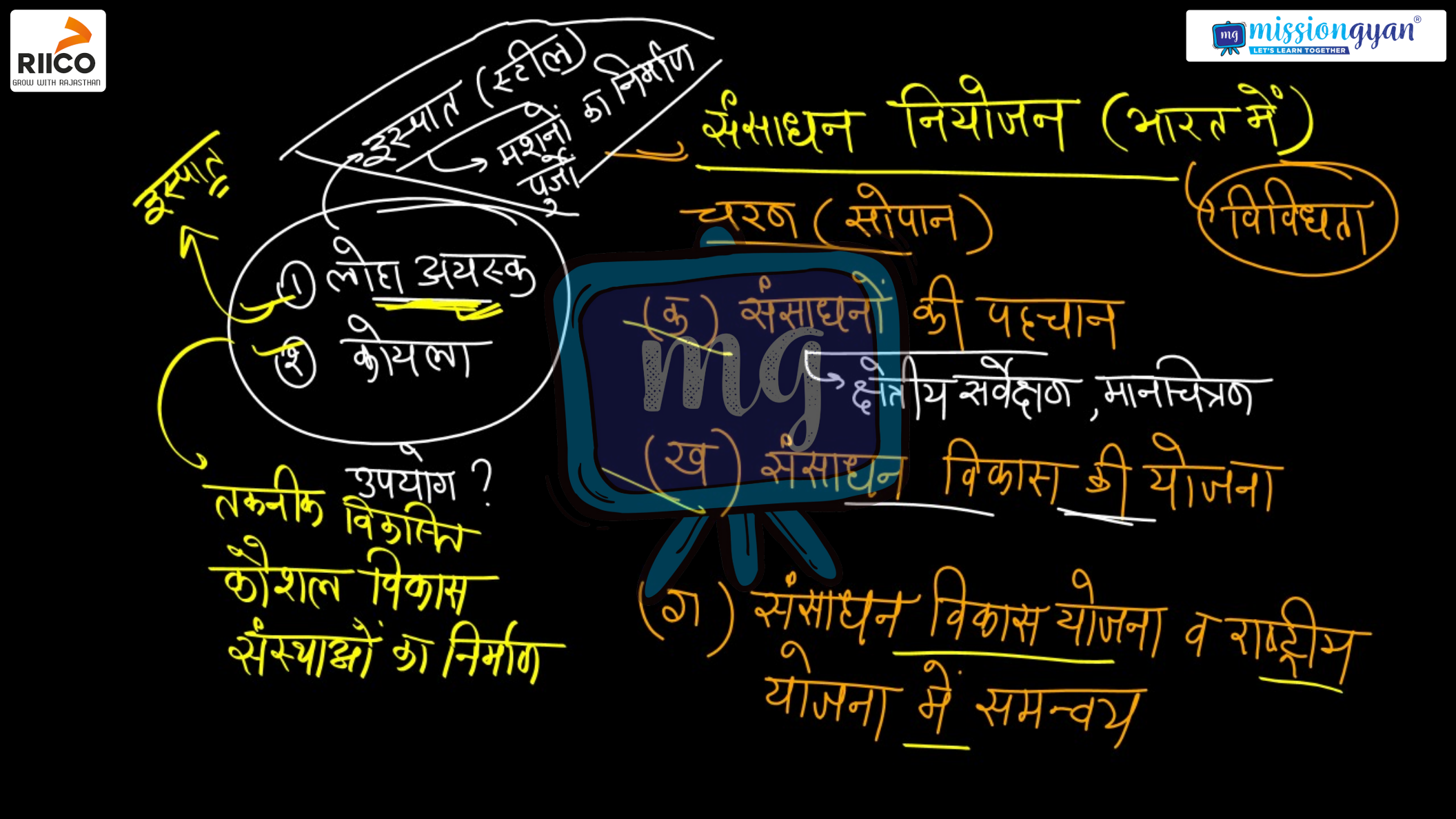
ऐसा आर्थिक विकास, जो पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए हो और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न करे, क्या कहलाता है ?

अ विनाशकारी विकास

ब सतत पोषणीय विकास

स नकारात्मक विकास

द उपरोक्त में से कोई नहीं


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER
इस्पात (स्टील)
मशीनों का निर्माण
पुर्जों
इस्पात
① लौह अयस्क
② कोयला
उपयोग ?
तकनीकी विकल्प
कौशल विकास
संस्थाओं का निर्माण
संसाधन नियोजन (भारत में)
चरण (सोपान)
विविधता
(क) संसाधनों की पहचान
क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्रण
(ख) संसाधन विकास की योजना
(ग) संसाधन विकास योजना व राष्ट्रीय योजना में समन्वय

भारत में संसाधन नियोजन

संसाधन	क्षेत्र
खनिज तेल	असम गुजरात मुम्बई हाई प० राज०
कोयला	छोटा नागपुर पठार ...
लोहा	

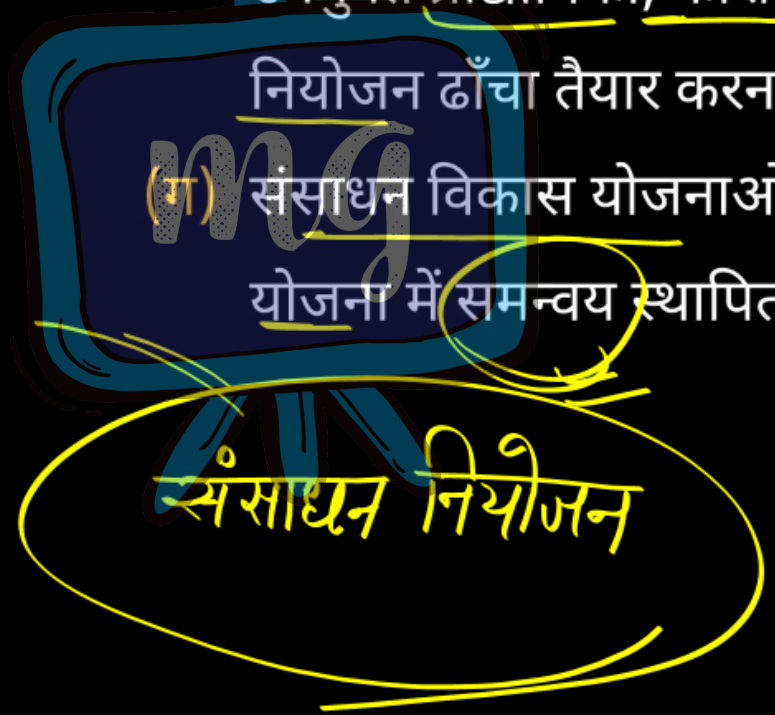
संसाधन नियोजन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें निम्नलिखित सोपान हैं —

(क) देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी तालिका बनाना ।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना और संसाधनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुमान लगाना ।

(ख) संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी, कौशल और संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना ।

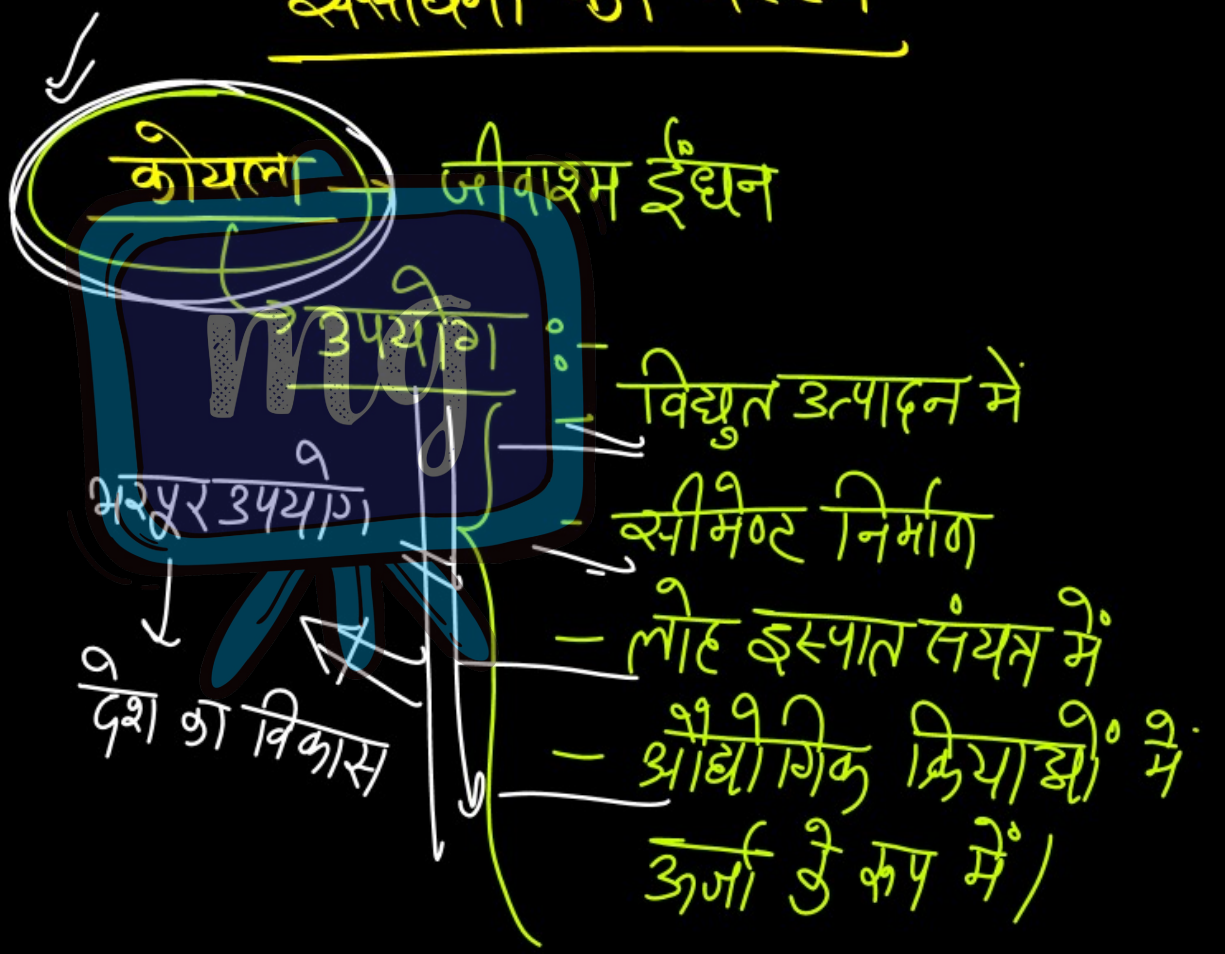
(ग) संसाधन विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना ।



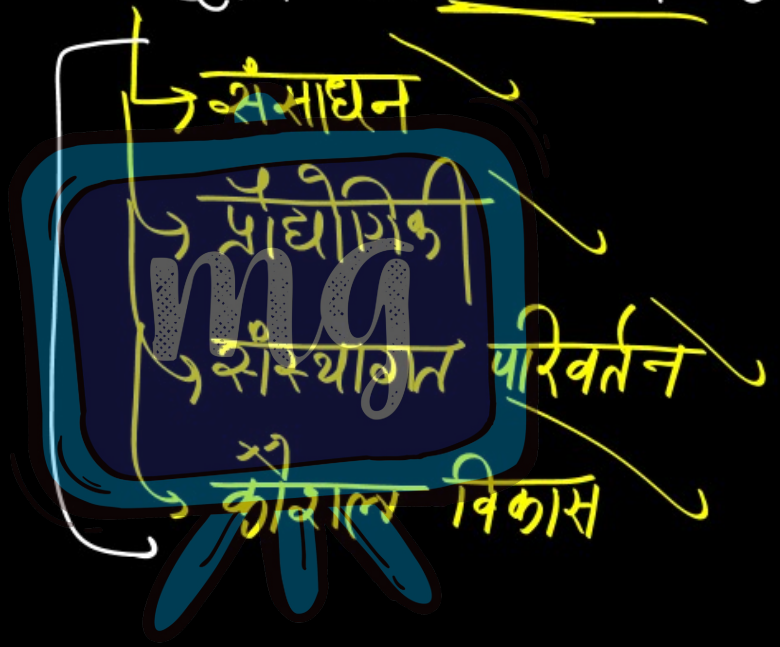
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

"संसाधनों का महत्व"



क्षेत्र का विकास करने हेतु आवश्यक

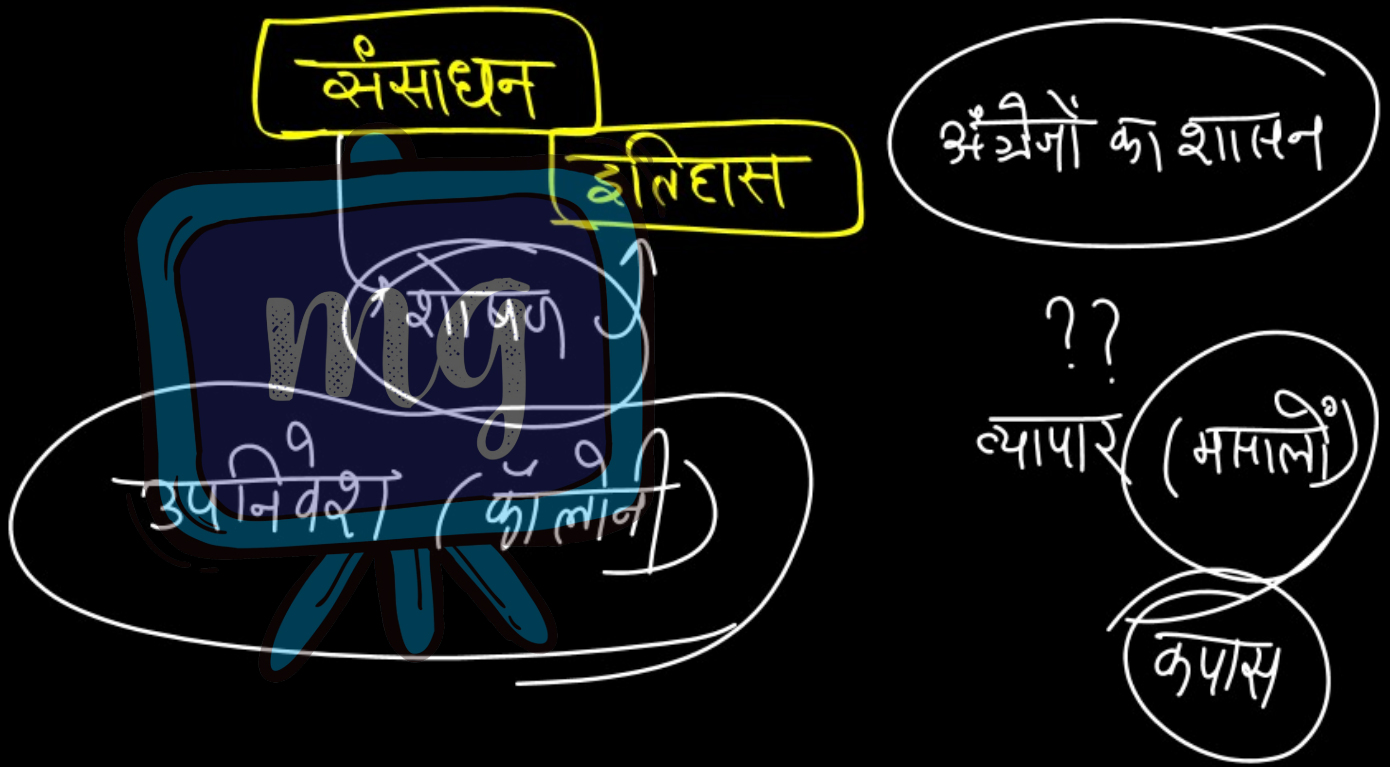


RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- किसी क्षेत्र के विकास के लिए संसाधनों की उपलब्धता एक आवश्यक शर्त है।
- परंतु प्रौद्योगिकी और संस्थाओं में तदनरूपी परिवर्तनों के अभाव में मात्र संसाधनों की उपलब्धता से ही विकास संभव नहीं है।
- देश में बहुत से क्षेत्र हैं जो संसाधन समृद्ध होते हुए भी आर्थिक रूप से पिछड़े प्रदेशों की गिनती में आते हैं।


संसाधन
इतिहास
अंग्रेजों का शासन
??
शासन
उपनिवेश (कॉलोनी)
व्यापार (मसालों)
कपास

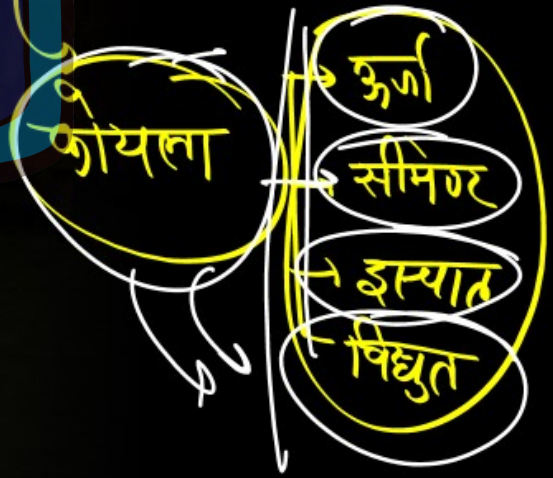


- इसके विपरीत कुछ ऐसे प्रदेश भी हैं जो संसाधनों की कमी होते हुए भी आर्थिक रूप से विकसित हैं।
- उपनिवेशन का इतिहास हमें बताता है कि विदेशी आक्रमणकारियों के लिए, उपनिवेशों में संसाधन-संपन्न प्रदेश मुख्य आकर्षण रहे हैं।
- उपनिवेशकारी देशों ने बेहतर प्रौद्योगिकी के सहारे उपनिवेशों के संसाधनों का शोषण किया तथा उन पर अपना आधिपत्य स्थापित किया ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अतः संसाधन किसी प्रदेश के विकास में तभी योगदान दे सकते हैं, जब वहाँ उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकास और संस्थागत परिवर्तन किए जाएँ।





संसाधनों का संरक्षण

- संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।
- परंतु, संसाधनों का विवेकहीन उपभोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इन समस्याओं से बचाव के लिए विभिन्न स्तरों पर संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है।
- भूतकाल से ही संसाधनों का संरक्षण बहुत से नेताओं और चिंतकों के लिए चिंता का विषय रहा है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जैसे— गांधी जी ने संसाधनों के संरक्षण पर अपनी चिंता इन शब्दों में व्यक्त की है – "हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी के लालच की संतुष्टि के लिए नहीं ।" अर्थात् **हमारे पास पेट भरने के लिए बहुत है लेकिन पेटी भरने के लिए नहीं ।**



- उनके अनुसार विश्व स्तर पर संसाधन ह्रास के लिए लालची और स्वार्थी व्यक्ति तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी की शोषणात्मक प्रवृत्ति जिम्मेदार है।
- वे अत्यधिक उत्पादन के विरुद्ध थे और इसके स्थान पर अधिक बड़े जनसमुदाय द्वारा उत्पादन के पक्षधर थे।

संसाधन संरक्षण

1968 → क्लब ऑफ रोम

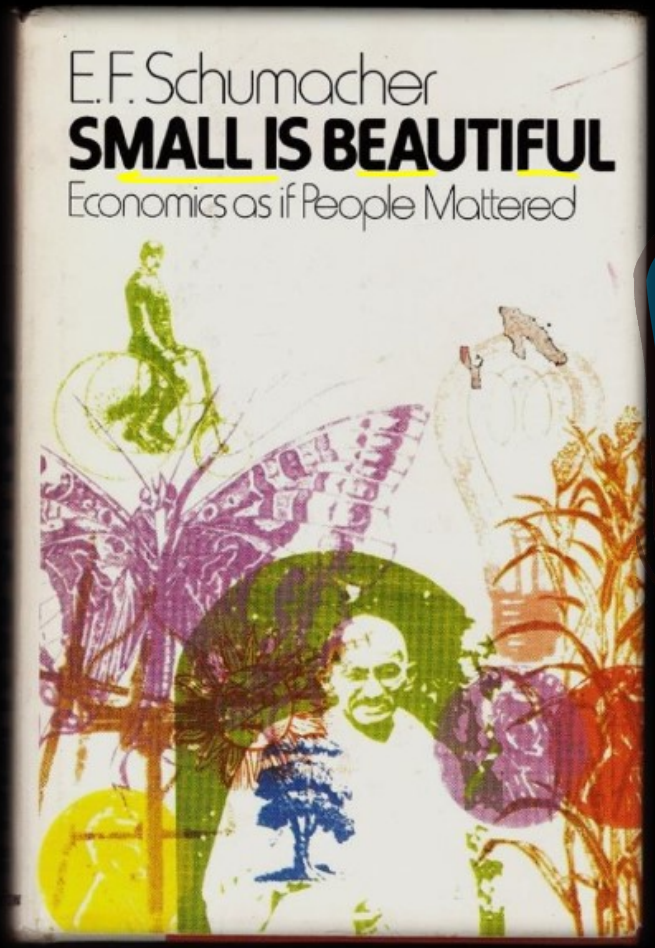
1974 → पुस्तक → "स्माइल इज ब्यूटिफुल"

लेखक → "शुमेसर"

→ गांधीजी के दर्शन की पुनरावृत्ति

1987 → "ब्रण्टलैण्ड आयोग"

→ "सतत् पोषणीय विकास"



- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से संसाधन-संरक्षण की वकालत 1968 में "क्लब ऑफ रोम" ने की।
- तत्पश्चात् 1974 में शुमेसर ने अपनी पुस्तक "स्माल इज ब्यूटीफुल" में इस विषय पर गांधी जी के दर्शन की एक बार फिर से पुनरावृत्ति की है।
- 1987 में "ब्रुन्ड्टलैंड आयोग" रिपोर्ट द्वारा वैश्विक स्तर पर संसाधन संरक्षण में मूलाधार योगदान किया गया।



- इस रिपोर्ट ने "सतत् पोषणीय विकास" (Sustainable Development) की संकल्पना प्रस्तुत की और संसाधन-संरक्षण की वकालत की।
- यह रिपोर्ट बाद में "हमारा सांझा भविष्य" (Our Common Future) शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।
- इस संदर्भ में एक और महत्त्वपूर्ण योगदान रियो_डी जेनेरो, ब्राजील में 1992 में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन द्वारा किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

